

आषाढ़ शुक्ला ४ अथवा पञ्चमी—

आज सूयन पटका धरें सूयन पटका छोरा वारे गुलाबी फेंटा मोर सिखा मध्य को शृंगार ठाड़े वस्त्र सफेद डोरिया के शोभते आभरण मोती के साथ फूल के शृंगार होय यह ताज के भाव के अथवा फूल के शृंगार आठमें ये जरूर होय है। पद फूलन के शृंगार के मल्हार राग में तथा मल्हार के पद फूल के शृंगार के विशेष—ओढ़े लाल उपरनी झीनी।

आषाढ़ शुक्ला ५—आज से परदनी आड़बन्द ये हांसिया के धरें शृंगार छोटे होय आज सफेद हरे हांसिया को आड़बन्द धर्यो मोर पक्ष की मोरशिखा छोटी शृंगार मोती के आभरण पिछवाई हांसिया की और सब आभरण मोती के पद मल्हार के गवे—

आषाढ़ शुक्ला ६ कसूमबाछठ षष्ठी पंडगू—

देहली वन्दनमाल दुहेरा गोपी वल्लभ आज ही विट्ठलनाथजी के यहाँ से तिलकायत श्रीगोविन्दजी गादी बिराजे को उत्सव आज ही श्रीवल्लभ महाप्रभु के पिता श्रीलक्ष्मण भट्टजी को जन्मोत्सव।

वस्त्र कसूमल पिछोड़ा पाग ठाड़े वस्त्र सफेद जामदानी जैसे आभरण सब मोती के मोर पक्ष की सादा चन्द्रिका शिरपेच लूम वनमाला को शृंगार चार कर्ण फूल हासधवल आदि पिछवाई कसीदा की कसीदा जैसी मोरन के पंख बिखरे भये गरमी से वर्षा के आगम ऊपर बादलन की घुमड़ाहट भारतीय एवं जापानी कला के साम्यवारी पिछवाई खण्ड। आज से गहरे रंग कसूमल आदि के वस्त्र धरें। पिछवाई जापान की फड़द दक्षिण की आड़ी तथा बाईं तरफ भारतीय कला की फड़द पिछवाई की। गो० ति० श्रीगोवर्द्धनलालजी के राज्य काल में एक जापान की कलात्मक अवरनुमा फड़द आई गोस्वामीजी ने सर्वत्र घोषणा करवाई या फड़द की दूसरी दिश ऐसी की ऐसी बनावे वायि खर्चा यहाँ से दियो जायगो सामान को। तथा इनाम हू और प्रभु सेवा तब गुजरात की एक बाई ने जो हेड मास्टरनी हुती वाने वीडा ली शीघ्रातिशीघ्र फड़द भेट करी सिद्ध करिके। वह आज हू उत्तर की ओर दर्शित होय है।

आज वि० १८८४ में श्रीविट्ठलनाथजी के यहाँ से दुहेरा मनोरथ कर्ता दाऊजी के पुत्र न होवे से लीला प्रवेश दाऊजी को भये वाद आप गोविन्दजी गादी बिराजे। वह उत्सव गोस्वामिनी तिलक के बहूजी, लक्ष्मी बहूजी ने गोद लिये तथा तीन साल तक तिलकायत की सेवा करी आपके पिता श्रीकृष्णरायजी हुते। आपको नाम पूर्व में वहाँ गोरजी कहे जाते। वही श्रीगोविन्दजी भये इनको जन्म दिन कार्तिक शुक्ला १४ को आवे तामें इनकी सेवा नगर विकास जनप्रियता प्रभु रस की महानता लिखेंगे।

आज ही लक्ष्मण भट्टजी को जन्म दिन है। दक्षिण में षष्ठी पंडगू अर्थात् कसूमबा छठ को मेला लगे है ऐसी सुन्यो है।

श्री लक्ष्मण भट्टजी श्रीबालभट्टजी के पुत्र जन्म वि० १५१० आज के दिन कांकरवाड़ ग्राम में भयो आपके चाई बड़े जनार्दन भट्ट हुते इनको विवाह सुसमी नामक ब्राह्मण की पुत्री इल्हमाबाद के साथ भयो इनको चार पुत्र दो कन्या भई। बड़े पुत्र रामकृष्ण जो लाले जावके संन्यासी भये श्री रामचन्द्र काशीनाथ एवं अगदगुरु श्रीवल्लभ भये दो कन्या सरस्वती सुमद्रा या प्रकार छः सन्तान चाई जन्मके ही यहाँ श्रीवल्लभ को प्राकट्य भयो।

आज की खासना एक और है। आज भक्त कामना कल्पतरु श्रीनाथजी ने विट्ठलनर को विप्रयोगानुभव को मुक्तकर दर्शन दे, सेवा दे कृतार्थ किये यासो ही अनुराग स्वरूप कसूमल वस्त्र धरें यश प्रसार हे सफेद ठाड़े वस्त्र सों आप छः भाग बाद आज सेवा करी। चन्द्र सरोवर में विप्रयोगानुभव बाद आज ही पुनः सेवा में, प्रवेश भयो। "परम-कृपाणु श्रीवल्लभ नन्दन करत कृपा निज हाथ दे जावे।" वारी वार्ता आज ही की है। कृष्णदास को सनाथ किये।

पद वा प्रकार गाये जाय—

मनस—भाईजु श्याम बटा। शृंगार होते में—देखो भाई ठाड़े नन्द किशोरनी के आज लागत लाल तथा कसूमि वस्त्रन के भाव के पद गवे।
शृंगार कसूमल—लाल माई बाँधे कसूमि पाग। राजभोग में उत्सव होवे सो बधई भये वस्त्रन नन्दन रूप अनूपसरूप कस्यो। उत्थावन—भवन मेरे कैसे लगत। **बाँधे—**गहरे रंग कसूमि तारी। **भारती—**लाल की शोभा कहत न आज। **कसूम—**कुज मल्हार के आपनमध्य लाल माई भीजत आये गेह हू चल नन्द-नन्दन बन बोली।

आषाढ़ शुक्ला ७—वस्त्र कसूमल सेलाकी परदनी लाल मदील श्रीमस्तक पर हीरा के आभरण छोटी शृंगार पिछवाई चितराम की दाख माड़वा की ठाड़े वस्त्र नहीं पद के भाव को शृंगार श्रीमस्तक पर गोल चन्द्रिका—सोहत लाल परदनी झीनी के भाव को शृंगार माने। मल्हार के पद कसूमल के भाव के गवे।

आषाढ़ शुक्ला ८—मल्लकाछ, हांसिया को पटका नहीं। चोटी तथा पटका धरे तो चोटी नहीं धरे-पटका एक धरे दुहेरा मल्लकाछ आवे तो दुहेरा पटका धरें आज हांसिया की मल्लकाछ पटका नहीं चोटी ठाड़े वस्त्र चन्दनी टिपारा सफेद लाल हांसिया के आभरण मोती के मध्य को कुण्डल को शृंगार पिछवाई चितराम की स्वामिनीजी वृक्ष सता पकड़ के खरे हैं तथा लता-पता कुञ्ज मे श्रीजी खण्ड भी वृक्षावली वारो टिपारा जोड़ सफेद मयूर पक्ष को।

सहित को फूलन को शृंगार नियम को मल्लकाछ टिपारा पटका तथा जोड़

आभरण के स्थान सब कलीन के पिछवाई श्याम भरती में सफेद काम की जल बिहार की शृंगार में भी ठाड़े वस्त्र रहे फूल के हैं की ।

विशेष पद—गावें-गावें गोघन संग गावे ।

आषाढ़ शुक्ला ६—वस्त्र कपासी नीले हांसिया के पिछोड़ा पाग हीरा मोती के आभरण मध्य को शृंगार पिछवाई हांसिया की कौतन मल्हार के ।

आषाढ़ शुक्ला १०—वस्त्र गहर गुलाबी घोती उपरना पाग नागकजी को कतरा ठाड़े वस्त्र नहीं आभरण बड़े मोतीन के सेहरा दुमालाये धरें छोटी पिछवाई चितराम की ग्याहला की पद सेहरा के भाव के मल्हार के । सब ठिकाने बेंगन आवें । यहाँ चातुर्मास्य में भी बेंगन अरोगे । श्री जगदीश की आज्ञानुसार बहुतायत साकन में होय । और धरन में भागे बेंगन नहीं अरोगे तासो बेंगन के ३६ प्रकार के व्यञ्जन अरोगाये । ननका वस्त्रभजी के बचनानुसार में बनिता है । तथा भगवदाज्ञा की मर्यादा श्रीजी में राखी तासों चातुर्मास्य में श्रीजी बेंगन अरोगे ।

आषाढ़ शुक्ला ११—वस्त्र गुलाबी हलके हांसिया हरे हांसिया काछनी सूधन चोली नहीं पहले मुकुट केवल फूल के शृंगार हेतु सूधन चोली जैसे ठाड़े वस्त्र सफेद मुकुट मोती को कुण्डल आभरण हास नवल पायल बाजू पहुँची ये सब मोती के गुलाबी पटका (पीताम्बर) हांसिया बारो पिछवाई खण्ड ह हांसिया वारो । सायं फूलन के शृंगार छेले सबस्त वस्त्र आभरण फूलन की कलीन के ये शृंगार ह होय ही है । पिछवाई चोकड़ी की मुनीजी कपोल बरती के फूलन के जैसी भारी कुण्डल वनमाला को शृंगार ठाड़े वस्त्र रहे ।

बिबिध प्रकार की सामग्री लुण्ढे के स्थान में माड़ा (रोटी) वासोधी आदि ।

मंगला—सखी री बूंद अचानक लागी । शृंगार—बोले भाई गोबर्द्धन पर मुरबा । रा० ल०—वृन्दावन मुनिवृन्दादिक । उत्थापन—आज पट पीत की परछाई । भोग शृंगार होते—फूलन सो वेनी—फूलन की चोली—फूल के महल में समुख—फूल के महल में बँडे माधव आरती में श्यामा-श्याम मुकुट फूल के बचन ।

आषाढ़ शुक्ला १२—वस्त्र ससबसी आड़बन्द हांसिया वारे । पाग भी बंग चुल्यो । ठाड़े वस्त्र नहीं । पिछवाई वस्त्र जैसे मोती हीरा के आभरण । छोटी शृंगार मल्हार के पद ।

आषाढ़ शुक्ला १३—जेठवदी १ को वह शृंगार कपोल के बनें की चोली वस्त्र तथा ये शृंगार आड़बन्द को छेले आड़बन्द सफेद मलमल को पिछवाई खण्ड सफेद मलमल के बिना किनारी के छोटे मोती के आभरण वही हार भी मस्तक पर खिड़की की पाग कतरा मोर पछ को । पद मल्हार के उष्णकाल को आड़बन्द को छेले शृंगार यदि हिंडोरा दूज को स्थापन होय तो एक आड़बन्द

या परदनी को शृंगार श्रावण वदी एकम को फिर उष्णकालवत् होय यह नियम को नहीं । एच्छिक होय ।

आषाढ़ शुक्ला १४—वशाख शुक्ला १५ वत् शृंगार वस्त्र सफेद परदनी पाग खण्ड पिछवाई मोती के आभरण हलको शृंगार मोर पक्ष सफेद की किलंगी आज भोग के समय वनमाला तथा गोवर्द्धन माला धरें छेली उष्ण कालिक सेवा तथा आरती भये बाद शृंगार के साथ बड़ी होय जाय ।

वनमाला गोवर्द्धन माला को सरूप भावना लीला—

वन-वन विपिन बिहारी नवीन वर्षारम्भ के द्वादश वन २४ उपवन के नव पल्लवित पल्लव की वनमाला धरे जो सब प्रकार के पत्र पुष्पादि से युक्त होय श्री अंग स्थित जैसी वनमाला है वैसी ही वनमाला धरावे । श्रीहस्त से श्रीहस्त तक जो रूप है वैसी फूलन को पल्लव को । गोवर्द्धन माला (कन्दरा पर आवे वो माला) यामें कोयल छोटी डाली दल सहित । यामें पुष्प नहीं होय पुष्प सहित बेन के पत्ता जुही मोगरा मोतिया आदि गोवर्द्धन पर्वत के चारो दिशा १३२ वन है उनमें अब ६६ वनन की सौरभ सो पल्लवित पुष्पित के ही गोवर्द्धन श्री माला धरायके बिराजे है । वा भाव सो गोवर्द्धन माला धरें वारह महिना में आज ही धरे । सायं भोग के सरेबाद धरें और ग्वाल के पूर्व बड़ी होय जाय ।

यह या प्रकार होय मल्हार में गोवर्द्धन और मेघ मण्डल वर्णन ।

मंगला—भाये भाई बरसा के अगवानी । शृंगार—सखीरी देख शोभा वन की । राजभोग—गोवर्द्धन पर्वत के उपर परम । उत्थापन—अंग-अंग धन कान्ति । भोग—अद्भुत कोतुक देख सखीरी । आरती—देखो भाई शोभा सावल तन । शयन—दृगन जोलो 'सुख होय तोलो' मान—पोढ़वे पर ।

आषाढ़ शुक्ला १५ आषाढ़ी पूनम, व्यास पूनम, वाचोली पूनम, गुद पूनम—

आज के दिन ही २४ अवतारन में श्री वेद व्यासजी को जन्म भयो आज के दिन ही पवन धारणा होय । अषाढ़ी तुलें । आज कचोली अरोगे । आज गुरुन को पूजन प्रभुवत् करें । जो अस्थापन करावे कथा करे—उनकी ।

देहली बन्दन माल हांडी गीजड़ की सामग्री गोपीवल्लभ में पिछवाई चितराम की बरसा के भाव की । जामें सुनहरी बिजली चपकती भई तथा ग्वाल-बाल पुष्पी ओड़े गायन के साथ ठाड़े है । अनेक भावपूर्ण दर्शनीय । ठाड़े वस्त्र जामदानी को वस्त्र सूधन लाल चूँदड़ी को काछनी लाल चूँदड़ी की नीचे ऊपर श्याम चूँदड़ी चोपूली पीताम्बर (पटका) आभरण मुकुट मोती के । हास प्रवल कुण्डल मयूराकृत मोती के वन माला को शृंगार । मोती झीने को छलो होय उष्णकाल के खण्ड मोती के आभरण । नख-शिख हृष साँकलादि समस्त मोती के

आभरण धरें। आज मंगला में उपरना धरे आज सो ठाड़े वस्त्र सदा आमें। बाहर चन्दवा भीतर दिवालगिरी। डोल तिवारी मणिकोठा निज मन्दिर आदि में चन्दवा वन्दन माल पड़दा वगेरे रंगीन चढ़े। पंखा रंगीन चढ़े कुञ्जातूत्यान में कलात्मक ढंग सो फूल-पत्ती बेल आदि आवे। चन्दन की बरणी में रंगीन वस्त्र आवे पंखा बगर सब रंगीन ऊष्णकालिक सेवा बिबा। सखड़ी में कचोली बरोगे।

“वेदाः श्रीकृष्ण वाक्यनि व्यास सूत्राणिचैवहि।

समाधि भाषा व्यासस्य प्रमाणं तच्चतुष्टयम्।”

अतः पुष्टि मार्ग में प्रमाण चतुष्टय के आधार पे व्यास चौबीस अवतारवत् होइवे सैं यहाँ सेवा में हू देहली वन्दनमाल गुरुवत प्रभु को मान उनकी सेवा श्रृंगार भोग रागन में रसवृष्टि करि प्रभु सुखहितार्थ यह उत्सव मानें।

पद निम्न प्रकार के होय—

मंगला में—भीजत कब देखो इन नेता। श्रृंगार होते में—वृन्दावन हम क्यों न भये मोर। देखो माई ये बड़भागी मोर। श्रृंगार सम्मुख—एरी नागर नन्दलाल मोर। राजभोग सम्मुख—वृन्दावन सघन कुञ्ज। उत्पापन—नयो नेह नयो मेह। श्याम वृषभान किशोरी। भोग में—माईरी श्याम घन-तन दामिनी। आरती में—आज पट पीत की छबिपाई। शयन में—चूदड़ी के भाव के पद गवे।

पुष्टि मार्ग में गुरु महत्ता तथा गुरु स्वरूप की व्याख्या—

गुरुब्रह्मा गुरुविष्णु गुरुदेवो महेश्वरः। गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥१॥
वसुदेव सुतं देवं कंस चाणूर मर्दनम् देवकी परमानन्द कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥२॥

वल्लभ सम्प्रदाय पुष्टि मार्ग में चार रूप में वैष्णव एवं गुरु स्वरूप के दर्शन होय है। वैष्णव सात्त्विक राजस तामस तथा निर्गुण होय है। याही प्रकार गुरु के चार रूपसों दर्शन होय हैं। वह ऊपर के श्लोक सो स्पष्ट है। ब्रह्मा रजोगुणी और सृष्टि रचियता है। गुरु पुष्टि सृष्टि वृद्धी में ब्रह्मावत गुरु तमोगुणी तामस भगवान शंकर संहारात्मक—यहाँ दुःख, काम, क्रोध, लोभ, मद मत्सर्यादि को संहार कर तमोगुण के दर्शन दे विष्णुवत् पालन स्थिति कर भक्तिभाव रसदान दे कृतार्थ करे पर ब्रह्म स्वरूप निर्गुणता में दर्शन दे यासो दूसरो श्लोक में कृष्ण ही गुरु है उनके विभिन्न रूप है वसुदेवसुत रजोगुणी, कंस चाणूर मर्दन करवे वारे तमोगुणी शिव। देवकी परमानन्द सरूप सतोगुणी निर्गुण रूपेण कृष्ण वंदे जगद्गुरु। यासो ही पुष्टि मार्ग की जयन्तीन में परमानन्द दास को पद “पद्मधर्योजनताप निवारण” यह पद गवे और यामें बीच की तुक में कह्यो है दीनानाथ दयालु जगत गुरु आरति हरण भक्त चिन्तामण। यह जयन्तीन में या पद को स्पष्ट भाव व्याख्या लिखेंगे।

श्रीनाथजी

श्रीनाथ-सेवा-रसोदधि

तृतीय तरंग

यूथाधिपा

श्री स्वामिनी ठकुरानी श्री राधारानी

सेवा-मास

श्रावण-माद्रपद-आश्विन